मौखिक [Oral– Reading and Listening Skills (pronunciation, fluency, comprehension)]

1. शुद्ध उच्चारण कीजिए–

कार्निवल	तिरस्कार	आश्चर्य	तसल्ली	मस्तानी	स्मरण	स्वार्थी
संपूर्णता	भौंचक्का	निःश्वास	अकस्मात	निकम्मा	शरबत	चेष्टा

2. सोचकर प्रश्नों के उत्तर बताइए–

(क) बालक जादू क्यों दिखाता था?

(ख) लेखक ने छोटे जादूगर को जादू दिखाने के लिए क्यों मना किया?

(ग) लेखक को छोटे जादूगर पर दया क्यों आई?

आओ वार्तालाप करें [Speaking Skills (Conversation)]

❖ हमें किसी भी व्यक्ति के कार्यों से घृणा क्यों नहीं करनी चाहिए? अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए।

विचार (Thought) (Critical Thinking)

सदैव मेहनत से कमाए धन तथा सद्मार्ग पर चलना चाहिए।

❖ क्यों? बताइए।

जीवन-कौशल (Life Skills)

बातों-बातों में (Speaking Skills-Conversation)

हमने सीखा कि बाल मज़दूरी एक कानूनन अपराध है। बच्चे हमारे देश का भविष्य हैं इसलिए में पढ़ाया जाना चाहिए।

शिक्षित होने के क्या लाभ हैं? बताइए।

निर्देश

द्यार्थियों को हमेशा मेहनत से कमाने तथा सद्मार्ग पर चलने की शिक्षा दें।

3 मालगुडी डेज़

(अनुवादित कथा)

प्रतिध्वनि

"महान कार्य करने का सिर्फ एक ही तरीका है और वह यह है कि आप अपने कार्य से प्रेम करें।"
– स्टीव जॉब्स

एक तरफ सूखे होंठ, सूखा गला, स्याही से रंगी उँगलियाँ व थकान और दूसरी तरफ परीक्षा खत्म होने की खुशी के साथ स्वामी अंतिम दिन परीक्षा भवन से बाहर निकला।

बाहर खड़े होकर उसने पीछे हॉल पर नज़र डाली और थोड़ा बेचैन हो गया। अगर सभी लड़कों ने उसकी तरह बीस मिनट पहले अपनी उत्तर-पुस्तिकाएँ दे दी होतीं तो उसे शायद अच्छा महसूस होता। राजम दूसरे रोशनदान के नीचे बैठा था और मशीन की तरह कलम चलाए जा रहा था। मटर सीट से पीठ टिकाए अपने उत्तर दोहरा रहा था। एक अध्यापक कुरसी पर ऊँघ रहे थे और दूसरे अबूझ दृष्टि लिए एक सिरे से दूसरे सिरे तक टहल रहे थे। लिखने की रगड़ और कागजों की खड़खड़ाहट की आवाज़ें चुप्पी भरे हॉल से आ रही थीं।

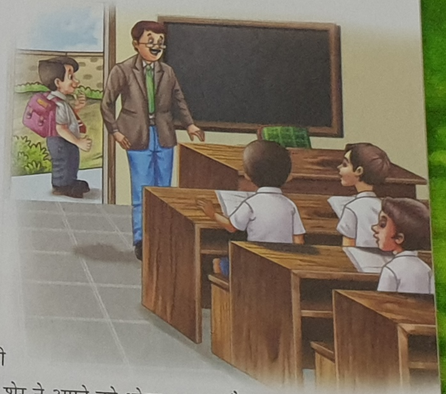

स्वामी को अचानक लगा कि उसे इतनी जल्दी बाहर नहीं आना चाहिए था। लेकिन वह हॉल में और कैसे रुक सकता था। तमिल का पेपर पाँच बजे तक चलने वाला था। उसने आखिरी सवाल की आखिरी पंक्ति साढ़े चार बजे तक लिख ली थी। छह प्रश्नों में से पहला प्रश्न उसने संतोषजनक रूप से किया था, दूसरे के बारे में उसे संदेह था। तीसरा ठीक था और चौथे के बारे में उसे साफ पता था कि वह गलत है लेकिन उसे सही उत्तर का भी पता न था। छठा उत्तर सबसे अच्छा था। इसका उत्तर देने में उसे एक मिनट लगा था। प्रश्न था– ब्राह्मण और शेर की कहानी से क्या शिक्षा मिलती है? (एक ब्राह्मण तालाब के किनारे से गुज़र रहा था। दूसरे किनारे से एक शेर ने उसे आवाज़ लगाई और उसे सोने की चूड़ी देने की बात कही। ब्राह्मण ने पहले तो चूड़ी लेने से मना कर दिया। किंतु जब शेर ने अपने को भोला-भाला और सच्चा बताया तो ब्राह्मण पानी में तैरकर उसके पास आ गया। इससे पहले कि वह सोने की चूड़ी लेने के लिए हाथ बढ़ाता, वह शेर के पेट में पहुँच गया।) स्वामी को यह फ़ैसला करने में एक मिनट लगा कि कहानी की शिक्षा यह है कि 'जब शेर सोने की चूड़ी दे तो हमें नहीं लेनी चाहिए' या 'सोने की चूड़ी का प्यार आदमी की जान ले लेता है।' उसने दूसरे जवाब में अधिक शिक्षा देखी और उसे लिख दिया।

उसे समय काटना मुश्किल लगा। पेपर तीन घंटे की बजाए ढाई घंटे का क्यों नहीं रखा गया!

उसने देखा कि एक अध्यापक उसे ध्यान से देख रहे थे। उसने तुरंत उत्तर-पुस्तिका में व्यस्त होने का बहाना किया। उसने सोचा कि ऐसा करते हुए वह उत्तर-पुस्तिका को थोड़ा दोहरा भी सकता है। फिर पन्ने पलटते हुए आखिरी सवाल के जवाब पर नज़र गड़ाई। उसे दोहराने का बहाना करना पड़ा।

उसने यह सोचते हुए फिर दीवार-घड़ी की ओर देखा कि शायद अब पाँच बज गए होंगे। किंतु साढ़े चार के बाद दस मिनट और बीते थे। दो-तीन लड़कों को पेपर देते और बाहर जाते हुए देखा तो वह बहुत खुश हुआ। उसने जल्दी से पेपर के फ्लैप पर सुंदर मोटे अक्षरों में लिखा–

'तमिल'।
डब्ल्यू. एस. स्वामीनाथन
फर्स्ट फार्म, 'ए' सेक्शन
एल्बर्ट मिशन स्कूल
मालगुडी
दक्षिण भारत
एशिया

घंटी बजी। टोलियों में लड़के हॉल से निकले। पिछले तीन घंटों का वातावरण एकाएक बदल गया। चारों ओर उत्साहपूर्ण बातचीत का कोलाहल भर गया।

स्वामी ने एक सहपाठी से पूछा, "तुमने आखिरी सवाल के जवाब में क्या लिखा?"

"कौन-सा? शिक्षा वाला? तुम्हें याद नहीं है, अध्यापक जी ने कक्षा में क्या बताया था! सोने के लालच में ब्राह्मण की जान गई।"

"सोना वहाँ कहाँ था? वहाँ तो सिर्फ सोने की चूड़ियाँ थीं। तुमने उसका जवाब कितना लंबा दिया?" स्वामी ने आपत्ति की।

"एक पृष्ठ," सहपाठी ने उत्तर दिया।

थोड़ी देर बाद उसे राजम और शंकर मिले।

"हाँ भाई, तुम लोगों को पेपर कैसा लगा?" स्वामी ने पूछा।

"तुम्हें कैसा लगा?" शंकर ने पूछा।

"बुरा नहीं था," स्वामी बोला।

"मुझे तमिल से ही डर लग रहा था। अब लगता है मैं बच गया। पास होने लायक नंबर तो मिल ही जाएँगे।", राजम ने कहा।

"अरे, तुम लोग जानते हो न, कल से स्कूल की छुट्टी...।"

"तो फिर कल क्या करोगे?", किसी ने पूछा।

शंकर ने कहा, "मेरे पिता जी ने छुट्टियों में पढ़ने के लिए कई किताबें खरीदी हैं। जहाजी सिंदबाद, अलीबाबा आदि।"

मणि हाथ ऊपर उठाकर रोता-चिल्लाता हुआ आया, "वक्त बहुत ही कम था। वरना मैं आखिरी सवाल को भी उड़ा सकता था।"

मटर भी कहीं से प्रकट हुआ। उसके बायें गाल पर स्याही की बड़ी लकीर थी, "हैलो शंकर, फर्स्ट डिवीजन?"

"नहीं, मुश्किल से 35 मिलेंगे।"

पंद्रह मिनट बाद फिर घंटी बजी। सारा स्कूल हॉल में इकट्ठा हो गया। सबके चेहरे पर खुशी थी और बातों में अच्छी दोस्ती की झलक थी। अध्यापक जी भी अपनापन दर्शाते हुए खुश लग रहे थे।

हेडमास्टर साहब मंच पर आए और शोर के थमने का इंतज़ार करने के बाद उन्होंने छोटा-सा भाषण दिया। उन्होंने कहा कि स्कूल जून की 19 तारीख तक बंद रहेगा और 20 जून को खुलेगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि लड़के अपना समय बरबाद नहीं करेंगे और कहानियों की किताबें पढ़ते रहेंगे तथा अगली कक्षा की किताबों पर नज़र डालते रहेंगे, क्योंकि वे उम्मीद करते हैं कि सब लड़के अगली कक्षा में जाएँगे। अब एक मिनट और प्रार्थना होगी और उसके बाद सब लड़के अपने-अपने घर जा सकते हैं।

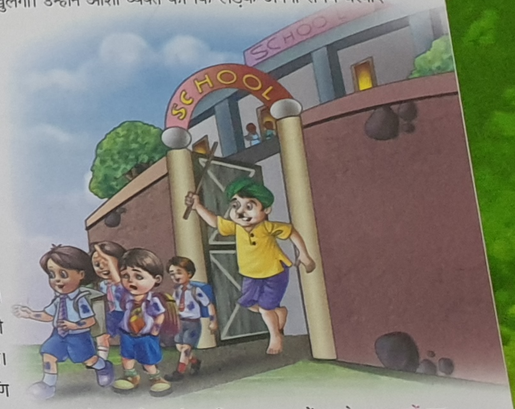

प्रार्थना के अंत में जैसे तूफ़ान आ गया। ऊँची आवाज़ों और चिल्लाहटों का झुंड रेले की तरह हॉल से बाहर निकला। इस सारी भगदड़ में स्वामी मणि के साथ लगा रहा।

मणि ने स्कूल के गेट पर तेज़ी से काम किया। किसी की कलम छीनी, किसी की दवात और उन्हें तोड़ दिया। उसके आस-पास लड़कों की खुशी और उत्तेजना से भरी भीड़ थी। एक-एक चीज़ के टूटने पर खूब शोर मचता था। एक-दो छोटे बच्चों ने दबे स्वर में विरोध किया लेकिन मणि ने उनके हाथों से भी दवातें छीन लीं। फिर ढक्कन खोलकर स्याही उन्हीं के कपड़ों पर गिरा दी। इस काम में उसके सहायकों का एक छोटा दल भी था, जिसमें स्वामी प्रमुख था। उस क्षण के उत्साह में आकर उसने अपनी दवात खुद ही अपने सिर पर उलट ली थी और बहती स्याही से उसकी आँखों के नीचे काले घेरे पड़ गए थे।

इसके साथ ही सैकड़ों कंठों से निकले विजय-घोष से आसमान गूँज उठा। फिर कुछ और दवातें फोड़ी गईं तथा कुछ और कलमें तोड़ी गईं। इस सारे तमाशे के बीच मणि जोर-से बोला, "कोई सिंगाराम की पगड़ी ले आए, मैं उसे रंग दूँगा।"

स्कूल का चपरासी सिंगाराम एकमात्र व्यक्ति था जो आज़ादी के इस उत्साह से प्रभावित नहीं था। जैसे ही उसके कानों में भनक पड़ी कि उसकी पगड़ी को रंगने की योजना बन रही है, वह डंडा लेकर भीड़ की तरफ दौड़ा और ऊधम मचाने वालों को भगा-भगाकर तितर-बितर करने लगा।

– आर.के.नारायण

जीवन मूल्य : हमें पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए और अनुशासन में रहना चाहिए।

शब्दार्थ

फार्म	–	कक्षा	उत्तेजना	–	जोश
प्रकट	–	जो सामने हो, प्रत्यक्ष	सहायक	–	सहायता करने वाला
सहपाठी	–	साथ पढ़ने वाला	उत्साहपूर्ण	–	हौसले से भरा हुआ
फ़ैसला	–	निर्णय	प्रभावित	–	प्रभाव पड़ा हुआ

पाठ्यविषयी मूल्यांकन (Curricular Assessment)

लिखित [Writing Skills (comprehension, spelling, vocabulary, grammar)]

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) परीक्षा हॉल से निकलकर स्वामी बेचैन क्यों हो उठा?

(ख) ब्राह्मण और शेर की कहानी से क्या सीख मिलती है?

(ग) हेडमास्टर साहब ने मंच पर आकर क्या कहा?

(घ) बच्चों ने किस प्रकार हुड़दंग मचाया?

(ङ) सिंगाराम कौन था और उसने क्या किया?

2. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए– [Multiple Choice Questions (MCQs)]

भाषा–बोध (Grammar-based Assessment)

1. शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाइए–

(क) विपत्ति – .....

(ख) आपत्ति – .....

(ग) उत्साह – .....

(घ) घोष – .....

(ङ) चीत्कार – .....

2. दिए गए वाक्यों में उचित कारक चिह्न भरिए–

(क) उस प्रश्न का उत्तर देने ..... उसे सिर्फ एक

(ख) सबके चेहरे ..... खुशी थी।

(ग) मैंने छुट्टियों ..... पढ़ने .....

(घ) उसने काम ..... व्यस्त होने .....

(ङ) एक दूसरे ..... ऊपर स्याही गिराकर खु

3. दिए गए शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए–

(क) परीक्षा – .....

(ग) पुस्तक – .....

(ङ) चूड़ी – .....

4. इस कहानी से चार परिमाणवाचक विशेषण ढूँढ़कर लि

.....

सह-पाठ्यक्रम गतिविधि

Date 10/6/2020 CLASS : VII HINDI 2ND LANG

आनंदी हिन्दी पाठमाला

CH: मालगुडी डेज़

लिखित :

1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए —

(क) परीक्षा हॉल से निकलकर स्वामी बेचैन क्यों हो उठा ?

Ans) परीक्षा हॉल से निकलकर स्वामी पीछे हॉल पर नजर डाली और थोड़ा बेचैन हो गया । अगर सभी लड़कों ने उसकी तरह बीस मिनट पहले अपनी उत्तर-पुस्तिकाएँ दे दी होतीं तो उसे शायद अच्छा महसूस होता ।

(ख) ब्राह्मण और शेर की कहानी से क्या सीख मिलती है ?

Ans) ब्राह्मण और शेर की कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि "जब शेर सोने की चूड़ी दे तो हमें नहीं लेना चाहिए" या "सोने की चूड़ी का प्यार आदमी की जान ले लेता है"।

(ग) हेडमास्टर साहब ने मंच पर आकर क्या कहा ?

Ans) हेडमास्टर साहब ने कहा कि स्कूल जून की 19 तारीख तक बन्द रहेगा और 20 जून को खुलेगा । उन्होंने आशा व्यक्त की कि लड़के अपना समय बरबाद नहीं करेंगे और कहानियों की किताब पढ़ते रहेंगे तथा अगली कक्षा की किताबों पर नजर डालते रहेंगे, क्योंकि वे उम्मीद करते हैं कि सब लड़के अगली कक्षा में जाएँगे ।

(घ) बच्चों ने किस प्रकार हुड़दंग मचाया ?

Ans) प्रार्थना के अंत में जैसे तूफान आ गया । ऊँची आवाजों और चिल्लाहटों का झुंड रेले की तरह हॉल से बाहर निकला । मणि ने स्कूल के गेट पर किसी की कलम छीनी, किसी की दवात को तोड़ दिया । लड़कों की खुशी और उत्तेजना से भरी भीड़ थी । एक-एक चीज के टूटने पर खूब शोर मचाता था । सैंकड़ों कंठों से निकले विजय-घोष से आसमान गूँज उठा । फिर कुछ और दवातें फोड़ी गईं तथा कुछ और कलमें तोड़ी गईं ।

(ङ) सिंगारम कौन था और उसने क्या किया ?

Ans) सिंगारम स्कूल का चपरासी था और वह एकमात्र व्यक्ति था जो बच्चों की इस आजादी से प्रभावित नहीं था । जैसे ही उसके कानों में भनक पड़ी कि उसकी पगड़ी को रंगने की योजना बन रही है, वह डंडा लेकर भीड़ की तरफ दौड़ा और ऊधम मचाने वालों को भगा-भगाकर तितर-बितर करने लगा ।

2) सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाइए —

(क) हेडमास्टर साहब ने मंच पर क्या दिया ?

(i) इनाम ☐ (ii) भाषण ☑ (iii) मिठाई ☐

(ख) स्कूल कब खुलने वाला था ?

(i) 10 मार्च ☐ (ii) 19 जून ☐ (iii) 20 जून ☑

(ग) परीक्षा कितने घंटे की थी ?

(i) दो [ ] (ii) तीन [✓] (iii) ढाई [ ]

(घ) सिंगाराम कौन था ?

(i) चपरासी [✓] (ii) चौकीदार [ ] (iii) ड्राइवर [ ]

3) किसने, किससे कहा ?

(क) सोना वहाँ कहाँ था ?

Ans) स्वामी ने सहपाठी से कहा ।

(ख) मुझे तामिल से ही डर लग रहा था ।

Ans) राजम ने स्वामी से कहा ।

(ग) हैलो शंकर, फर्स्ट डिवीजन

Ans) मटर ने शंकर से कहा ।

(घ) विद्यालय 20 जून को खुलेगा ।

Ans) हेडमास्टर साहब ने विद्यार्थियों से कहा ।

(ङ) कोई सिंगाराम की पगड़ी ले आए, मैं उसे दंग दूँगा ।

Ans) मणि जोर से अपने दोस्तों से कहा ।